Omniscient
(An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal)
Vol 2 Issue 2 April-June 2024 EISSN: 2583-7575

स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहार की महिलाओं का योगदान

चिंटू कुमारी

राजनीतिशास्त्र विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

संदीप कुमार

राजनीतिशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

Corresponding author: sandeepkrara1994@gmail.com
Available at https://omniscientmjprujournal.com

सारांश

भारत के इतिहास में स्त्रियों का स्थान सदा से ही गौरवपूर्ण रहा है तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में भी महिलाओं का योगदान अति महत्वपूर्ण है। इतिहास भी साक्षी है कि महिलाओं ने सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में गुरुतर दायित्वों का निर्वहन किया है। यदि बात हम बिहार कि करें तो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहारी महिलाओं की भागीदारी विशेषतः उल्लेखनीय है। उन्होंने जिस दृढ़ता एवं वीरता के साथ स्वतंत्रता आन्दोलन में संघर्ष किया, वह आज भी स्वर्णाक्षरों अक्षरों में अंकित है। 1936 में जब बिहार एक नया प्रान्त बना तब से 1947 तक बिहार की दर्जनों नाम - गुमनाम महिलाओं ने आजादी की लड़ाई में भारत के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा आगे बढ़कर योगदान दिया है।

स्वतंत्रता आन्दोलन के जन आन्दोलन में परिवर्तित होने की कहानी बिहार से ही शुरू होती है। चंपारण में ही महात्मा गाँधी ने भारत के नवीन राष्ट्रवाद का सफल प्रयोग किया था। इस सत्याग्रह ने बिहार के समस्त नागरिकों के मन में निर्भीकता, ईमानदारी तथा राजनीतिक चेतना की भावना भरी। आजादी की लड़ाई का जब भी शंखनाद हुआ बिहार ने अविलंब पूरी निष्ठा के साथ उसमें भाग लिया तथा यहाँ की महिलाओं की कुर्बानी और जज़्बा अविस्मरणीय है। लेकिन इतिहास के पन्नो से उनकी बहुत ही सीमित और सतही जानकारी मिलती है (दुत्ता, 1998)। बिहार की क्रांतिकारी महिलाओं के योगानन को जनमानस के समक्ष उजागर करना शैक्षिक उत्तरदायित्व है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत करते हुए यह शोध प्रपत्र बिहारी महिलाओं के भुला दिए गए पहचान और योगदान के पीछे की राजनीति पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है।

बीज शब्द*: स्वतंत्रता, आन्दोलन, भागीदारी, योगदान, न्योछावर, रचनात्मक कार्यक्रम, सत्याग्रह,त्याग , आत्मबल*

प्रस्तावना

बिहार कि धरती को बुद्ध , महावीर और गाँधी ने अपने कार्यों और विचारों से सींचा है। गाँधी जी की प्रारंभिक राजनीतिक कर्म भूमि बिहार रही है, जहाँ से उन्होंने अत्यधिक संख्या में महिलाओं को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर आंदोलित करने के लिए अभिप्रेरित किया। हमारे इतिहास की पुस्तकों में जिसे चंपारण आन्दोलन के नाम से जाना जाता है, नील की खेती करने वाले किसानों के शोषण के खिलाफ यह आन्दोलन महात्मा गाँधी ने **1917** में बिहार के चंपारण से ही शुरू किया, जो कि बिहार के उत्तर – पूर्व में स्थित एक जिला है (कुमार, **2019**) । इतिहास

इस बात का भी साक्षी है कि बिहार बहुत लम्बे समय से राजनीति के केंद्र में रहा है। इसको इसी तथ्य से समझा जा सकता है कि पिछले कई दशकों में भारत में जो महत्वपूर्ण सामाजिक राजनीतिक बदलाव हुए हैं, बिहार उसकी जननी रहा है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में बिहार का अपूर्व योगदान रहा है जिसमें विशेषरूप से बिहार की महिलाओं के योगदान को तो भुलाया नहीं जा सकता।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में बिहारी महिलाएं

भारत को स्वतंत्र करने का पहला संगठित प्रयास सन् 1857 ई. में एक सैनिक विद्रोह के रूप में शुरू हुआ था। इसमें महिलाओं के लिए भाग लेने का कम अवसर था, क्योंकि भारत की तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, परिस्थितियों में स्त्रियाँ बाहरी कार्यों में खुलकर भाग नहीं ले सकती थीं। यह प्रतिबन्ध निम्न वर्ग की स्त्रियों पर लागू नहीं था। अतएव निम्न एवं मध्यम वर्ग की महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐसी भारतीय वीरांगनाओ में लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, अजीजन बाई, बैजा बाई, अवन्ती बाई जैसी सैकड़ों महिलाओं की गाथाएँ बड़ी ही रोचक हैं | वैसी ही वीर महिलाओं में बिहार की बेगम हाजी, धरमन बीबी, करमन बीबी, तथा नर्तकी गुलाबी का नाम बड़े ही गर्व से लिया जाता हैं, जिन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर 1857 की क्रांति में मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर डाला | (अमरेन्द्र, 2012)। 1857 के आन्दोलन में भोजपुर के सासाराम, जगदीशपुर, पिरो, बीबीगंज और आरा की अनेक महिलाओं ने गुप्त रूप से वीर कुंवर सिंह की सेना को काफी मदद की थीं | (सुषमा, 2020)

महात्मा गाँधी का **बिहार आगमन एवं स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहारी महिलाएं**

1917 में चंपारण सत्याग्रह के सिलसिले में गाँधी का आगमन बिहार की धरती पर हुआ | चंपारण में अंग्रेज़ किसानों को तीन कठिया व्यवस्था के अंतर्गत नील पैदा करने के लिए मजबूर करते थे | इस तिनकठिया व्यवस्था में किसान अपनी जमीन के 3/20 भाग पर नील उगाने के लिए मजबूर थे | इसके खिलाफ स्थानीय किसानों में काफी असंतोष था | उन्ही किसानों में से एक थे – राजकुमार शुक्ल जो 1916 के लखनऊ कोंग्रस में अपनी फरियाद लेकर पहुँचे और वहीँ उनकी मुलाकात गाँधी से हुई, जिन्हें उन्होंने चंपारण की दारुण कहानी कह सुनायी और अन्ततः गाँधी को बिहार आकार आन्दोलन का नेतृव करने पर तैयार किया | इस प्रकार गाँधी जी 1917 ई. में बिहार दौरे पर चंपारण आए | हालांकि 1917 ई. के उनके चंपारण मिशन को मूलतः मानवीय समझा जाता है, परन्तु उसका उदेश्य महिलाओं की दशा सुधारना एवं उनमें राष्ट्रीयता को जागृत करना भी था (अमरेन्द्र, 2012)। गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन से प्रभावित होकर

सैकड़ों महिलाएं अपने आँखों में मुल्क को ब्रिटिश हुकूमत से आजाद कराने का सपना संजोकर स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़ी थी | बिहार की महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ हर दौर में अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर लोहा लेने का काम किया है | गाँधी ने स्त्री को माँ और पत्नी की भूमिका के अलावा समाज में भी अहम् भूमिका दी | उनका मानना था कि अहिंसात्मक संघर्ष में स्त्रियाँ अधिक अच्छी भूमिका निभा सकती हैं | परन्तु इसके लिए उनको पुरुष के द्वारा उत्पन्न की गई हीन भावना को दूर करना होगा | उनको गुड़ियों की दुनियाँ में रहने से साफ़ मना कर देना होगा | स्त्री का जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह पुरुषों को नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता को अपने गुणों के माध्यम से वशीभूत करे (जोशी, 2006)।

स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान देने वाली प्रमुख महिलाएं

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जब महात्मा गाँधी "करो या मरो" के नारा के साथ 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का श्री गणेश हुआ। सरकार ने रातों-रात देश के तमाम शीर्ष नेताओं को जेल के सलाखों में डाल दिया तब पूरे देश में क्रांति की लहर दौड़ चली। जिसमें स्त्रियों ने भी बढ़ – चढ़कर भाग लिया | ब्रिटिश हुकूमत के दमन चक्र के वावजूद स्त्रियाँ तनिक भी विचलित नहीं हुई | बिहार ने अपने गौरव के अनुकूल आजादी की लड़ाई में भाग लिया और बिहार की स्त्रियों ने यह सिद्ध कर दिया कि वे देश के अन्य राज्यों की स्त्रियों से कम नहीं है | यह बात दूसरी है कि अभी हमें बिहार की महिलाओं के योगदान की जानकारी नहीं है | परन्तु यह तो अक्षरसः सत्य है की महिलाओं ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी आहुति दी है | बिहार की अग्रणी महिलाओं में डॉ. राजेंद्र प्रसाद की बहन भगवती देवी, उनकी पत्नी श्रीमती राजवंशी देवी, लाल बहादुर शास्त्री की बहन एवं शम्भूशरण वर्मा की पत्नी श्रीमती सुंदरी देवी, लोकनायक जयप्रकाश नारायण की पत्नी श्रीमती प्रभावती देवी, श्रीमती सुमित्रा देवी, श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, अनुसुईया जायसवाल, श्रीमती शांति ओझा, श्रीमती लीला सिंह, श्रीमती रामस्वरूप देवी, श्रीमती शारदा कुमारी, श्रीमती प्रियवदा देवी, श्रीमती हसन इमाम, श्रीमती भवानी मल्होत्रा, (अमरेन्द्र ड. क., 2006), सरस्वती देवी, रामप्यारी देवी, चन्द्रावती देवी, तारा रानी श्रीवास्तव, श्री गौरी दास, सावित्री देवी, सुनीता सिन्हा, अकली देवी आदि नाम उल्लेखनीय हैं | इन स्त्रियों के योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि उन्होंने बिहार की महिला वर्ग में जगृति लाने का निरंतर प्रयास किया | उनकी प्रेरणा से ही अनेक महिलाओं ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया, जेल गयीं और अपने प्राणों तक को देश को आजाद कराने के लिए न्योछावर कर डाला (सुषमा, 2020)।

स्वतंत्रता आन्दोलन के रचनात्मक कार्यक्रमों में बिहारी महिलाएं

गाँधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को बहुआयामी रूप दिया था और समग्र मुक्ति ही उनका उदेश्य था | समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ उन्होंने न केवल राजनीतिक आन्दोलन चलाए बल्कि कई रचनात्मक कार्यक्रमों का भी संचलान किया | जिसमें बिहार की महिलाओं ने खुलकर समर्थन किया और भाग लिया साथ ही इन कार्यक्रमों को जन – जन तक पहुँचाने में भी भागीदारी निभाई | इन रचनात्मक कार्यक्रमों में महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन, अस्पृश्यता उन्मूलन, सांप्रदायिक सद्भाव आदि पर भी जोर दिया | इसके अलावे बिहार यात्राओं के दौरान चरखे का प्रचार, हिन्दू-मुस्लिम एकता एवं स्वदेशी सामानों का इस्तेमाल करने का आह्वान किया | इन विचारों से सभी वर्गों के लोग काफी प्रभावित होकर गाँधी जी के साथ जुड गये | गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों से महिलाएं काफी प्रभावित हुईं तथा उनमें जागृति आई थी | महिलाओं पर्दाप्रथा को तोड़कर कर बाहर निकली और स्वाधीनता आन्दोलन एवं सामाजिक सुधार आन्दोलन में सक्रीय भूमिका निभाने लगी |

असहयोग आन्दोलन

असहयोग आन्दोलन के दौरान बिहार की शहरी एवं ग्रामीण, सभी क्षेत्रों की महिलाएं सक्रिय थीं | 1922 के आसपास हाजीपुर अनुमंडल का ग्रामीण इलाका पुरे देश में सबसे आगे रहा | इस इलाके में घटारों गाँव की स्त्रियाँ आन्दोलन में काफी सक्रीय रहीं | इस अनुमंडल में श्री किशोरी प्रसन्न सिंह की पत्नी सुनीता देवी, श्री कुशवेश्वर सिंह की पत्नी विंदा सिंह, श्री कपिलदेव सिंह की माँ और श्रीमती रामसखी देवी घटारों की थी (सिन्हा, 1990)। असहयोग आन्दोलन के दिनों में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम थी | कुछ महिलाओं में माधुरी तथा उर्मिला का नाम आता है (सहाय, 2021)।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन

बिहार की लक्ष्मीबाई के नाम से पुकारी जाने वाली एक निडर, बहादुर महिला जिनका नाम रामस्वरूप देवी है ने क्रांति की भूमि बिहार में भारत की गुलामी के समय अग्रेजों से लड़ाई लड़ी थी और अंग्रेजी हुकूमत को डांवाडोल कर दिया था | बचपन से ही रामस्वरूप देवी जी बिहार के क्रांतिकारियों की टोली में रहती और उनके कार्यों में हाथ बँटाती थीं | सन् 1930 ई. के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में खुलकर आगे आयीं और अपने सत्याग्रह अभियान को जारी रखा |

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेते समय वे बंदी बना ली गयी थीं और उन्हें भागलपुर के कारागार में भेज दिया गया था | बाद में वे रिहा कर दी गयीं (अमरेन्द्र ड. क., 2006)।

नमक सत्याग्रह आन्दोलन

1930 ई. में नमक सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ | गाँधी के घोषणानुसार नमक खुद बनाया जाने लगा | इस क्रम में नमक की पुड़िया चंद्रावती ने बनाई और पहली बार उन्होंने पटना सिटी के निवासी स्व. डोमा सरदार के हाथ डेढ़ रूपये में उसे बेचा | इस प्रकार काफी रूपये एकत्रित कर उसे संगठन के कार्य में लगाया (अमरेन्द्र ड. क., 2006)। इन्होने नमक सत्याग्रह आन्दोलन में खुलकर भाग लिया | नमक सत्याग्रह आन्दोलन के समय एक क्रन्तिकारी महिला राम स्वरुप देवी के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है |

भारत छोड़ो आन्दोलन

भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान बिहारी समाज की महिला स्वतंत्रता सेनानीयों की भागीदारी रही है | 9 अगस्त 1942 ई. को भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू हो गया | लोकनायक जयप्रकाश नारायरण के नेतृत्व में पटना की सड़कों पर हजारों छात्र सर पर कफ़न बांधकर निकल पड़े | रामस्वरूप देवी उन छात्रों के जुलूस में वन्दे मातरम्, भारत माता की जय, इन्कलाब जिंदाबाद के नारे लगाते हुए आगे बढी (अमरेन्द्र ड. क., 2006)। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भवानी देवी पटना में ही थीं, वहां का दृश्य देखकर वे ट्रेनिंग स्कूल से निकलकर कार्य में जुट गई और गोरों के आने पर एक परिवार ने इन्हें 20 दिनों तक अपने यहाँ छुपाये रखा। इस आन्दोलन में अनेक गुमनाम महिलाओं ने भी योगदान दिया है जिसकी चर्चा हम नहीं कर सके है जिसके लिए खेद है | निम्न वर्गीय जातीय जनजातिय महिलाओं का भी आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा जिनको इतिहासमे स्थान और पहचान नहीं मिल पाया है|

निष्कर्ष

बिहार की महिलाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन की प्रत्येक रणनीतियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है | स्त्रियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन के समय ब्रिटिश हुकूमत के दमन के अलावे, पितृसतात्मक समाज के बंधनों में बंधी थी | हम कह सकते है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएं दोतरफा गुलामी झेल रही थी | इसलिए महिलाएं ब्रिटिश हुकूमत की गुलामी एवं पितृसतात्मक बंधनों दोनों स्तरों पर स्वतंत्र होने की लड़ाई लड़ रही थी | महात्मा गाँधी, डॉ. अबेडकर, राजा राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई, फतिफा शेख जैसे स्वतंत्रता सेनानियों, समाज

सुधारकों के अथक प्रयास और जागरूकता अभियान से प्रभावित होकर महिलाएं सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक रूप से चेतनशील हुई और अपने देश के प्रति देशभक्ति की भावना जगाई | महिलाओं ने देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने तथा सभी क्षेत्रों में पूरी तत्परता के साथ काम किया | वैदिक काल के बाद भले ही नारी इस समय पुरुषों से अनेक क्षेत्रों में पीछे थी लेकिन बिहारी महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लिया | महिलाओं ने देश के प्रति प्रेम भावना का परिचय देते हुए व उसे आजाद कराने के लिए सभी तरीकों से अपना योगदान दिया | शांति प्रिय आंदोलनों से लेकर क्रन्तिकारी आंदोलनों में बिहार की महिलाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दी | स्त्रियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में अपने आप को विविध आयामों के साथ विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया | वर्तमान समय में भारतीय समाज आजादी के अमृत महोत्सव के जश्न में है और अपने स्मृतियों में आजादी के संघर्षों को याद कर रहे है ऐसे में बिहार की महिला सेनानियों की गाथा को भी याद करना और अपने भविष्य के पीढ़ी को अवगत करना भी हमारी मुख्य जिम्मेदारी बन जाती है | स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं का क्या योगदान रहा है उनकी चर्चा एवं गुमनाम महिलाओं के इतिहास को खंगाल कर निकालना उसे सार्वजनिक पटल पर लाने का संकल्प ही अपने स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सच्ची श्रधांजलि होगी | क्योंकि आजादी के 75 सालों बाद भी इतिहास के पन्नो से महिला स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास कोसों दूर है को खोजकर दस्तावेज के रूप सार्वजनिक करने की जरुरत है |

सन्दर्भ

एस . एन . पी सिन्हा. (1990). *स्वतंत्रता संग्राम में बिहारी* महिलाएं. पटना: जानकी प्रकाशन

के. के दुत्ता. (1998). *बिहार में स्वतंत्रता आन्दोलन का* इतिहास. पटना: बिहार ग्रन्थ अकादमी

गोपा जोशी. (2006). *भारत में स्त्री* असमानता. दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय

डॉ. कुमार अमरेन्द्र. (2006). *स्वाधीनता संग्राम में बिहार की* महिलाएं. पटना: जानकी प्रकाशन

डॉ. सुषमा. (2020). *भारतीये राष्ट्रीय आन्दोलन में बिहारी* महिलाएं. पटना: जानकी प्रकाशन

प्रमोदानंद दास एवं कुमार अमरेन्द्र. (2012). *बिहार के विकास में महिलाओं की* भूमिका. पटना: जानकी प्रकाशन

महात्मा गाँधी के रचनात्मक कार्यों में बिहारी महिलाओं का योगदान. (दि.न.)

शिवपूजन सहाय. (2021). *बिहार की* महिलाएं. पटना: राज पब्लिकेशन

संजय कुमार. (2019). *बिहार की चुनावी* राजनीति, *जाती वर्ग का समीकरण (1990-2015)*. दिल्ली: फॉरवर्ड प्रेस